2026 Volume: 02 Issue: 06 www.ijrpa.com ISSN 2456-9995 Review Article

International Journal Research Publication Analysis

Page: 01-08

"समकालीन भारतीय समाज में पर्यावरणीय जागरूकता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व"

***Dr. Sujata Bharti**

Faculty of Education Motherhood University, Roorkee (Utrakhand)

Article Received: 26 April 2026
Article Revised: 16 May 2026
Published on: 05 June 2026

***Corresponding Author: Dr. Sujata Bharti**
Faculty of Education Motherhood University, Roorkee (Utrakhand)

DOI: https://doi-doi.org/101555/ijrpa.3626

सारांश (ABSTRACT)

वर्तमान समय में पर्यावरणीय समस्याएँ वैश्विक स्तर पर गंभीर चुनौती के रूप में उभरकर सामने आई हैं। भारत जैसे विकासशील देश में औद्योगिकीकरण, नगरीकरण, जनसंख्या वृद्धि तथा प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन के कारण पर्यावरणीय असंतुलन निरंतर बढ़ता जा रहा है। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, वनों की कटाई, जलवायु परिवर्तन तथा प्लास्टिक प्रदूषण जैसी समस्याएँ मानव जीवन को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित कर रही हैं। इन परिस्थितियों में पर्यावरणीय जागरूकता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य समकालीन भारतीय समाज में पर्यावरणीय जागरूकता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की आवश्यकता, महत्व एवं प्रभाव का अध्ययन करना है। इस अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि पर्यावरण संरक्षण केवल सरकार का कार्य नहीं है, बल्कि प्रत्येक नागरिक, संस्था एवं उद्योग की सामूहिक जिम्मेदारी है। शिक्षा, मीडिया, सामाजिक संगठनों तथा सरकारी योजनाओं के माध्यम से समाज में पर्यावरणीय चेतना का विकास किया जा रहा है।अध्ययन में यह भी बताया गया है कि सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना समाज को पर्यावरण संरक्षण के प्रति सक्रिय बनाती है। नागरिकों द्वारा वृक्षारोपण, जल संरक्षण, स्वच्छता अभियान तथा प्लास्टिक मुक्त अभियान जैसे कार्य पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। प्रस्तुत शोध पत्र वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है तथा द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से तैयार किया गया है। अंततः यह निष्कर्ष निकाला गया है कि सतत विकास एवं स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए पर्यावरणीय जागरूकता और सामाजिक उत्तरदायित्व का समन्वय आवश्यक है।

प्रमुख शब्द (KEYWORDS): पर्यावरणीय जागरूकता, सामाजिक उत्तरदायित्व, पर्यावरण संरक्षण, सतत विकास, प्रदूषण, भारतीय समाज, जलवायु परिवर्तन, सामाजिक चेतना।

प्रस्तावना (INTRODUCTION)

मानव और पर्यावरण का संबंध अत्यंत घनिष्ठ एवं परस्पर निर्भरता पर आधारित है। पर्यावरण मानव जीवन के अस्तित्व का मूल आधार है। जल, वायु, भूमि, वन, पशु-पक्षी तथा अन्य प्राकृतिक संसाधन मानव जीवन को संचालित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारतीय संस्कृति में प्रकृति को सदैव पूजनीय माना गया है। प्राचीन भारतीय ग्रंथों में वृक्षों, नदियों तथा पर्वतों के संरक्षण पर विशेष बल दिया गया है।किन्तु आधुनिक युग में बढ़ते औद्योगिकीकरण, शहरीकरण तथा तकनीकी विकास ने पर्यावरणीय संतुलन को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। वर्तमान समय में भारत अनेक पर्यावरणीय समस्याओं का सामना कर रहा है। महानगरों में वायु प्रदूषण का स्तर लगातार बढ़ रहा है। नदियाँ प्रदूषित हो रही हैं, वन क्षेत्र कम होते जा रहे हैं तथा जलवायु परिवर्तन के कारण प्राकृतिक आपदाओं में वृद्धि हो रही है।इन समस्याओं के समाधान के लिए केवल वैज्ञानिक उपाय पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि समाज में पर्यावरणीय जागरूकता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करना भी आवश्यक है। जब तक समाज का प्रत्येक व्यक्ति पर्यावरण संरक्षण को अपना नैतिक एवं सामाजिक दायित्व नहीं मानेगा, तब तक पर्यावरणीय समस्याओं का स्थायी समाधान संभव नहीं होगा।समकालीन भारतीय समाज में पर्यावरणीय जागरूकता धीरे-धीरे बढ़ रही है। सरकार, मीडिया, शैक्षणिक संस्थाएँ तथा सामाजिक संगठन विभिन्न अभियानों के माध्यम से लोगों को जागरूक करने का प्रयास कर रहे हैं। इसके बावजूद अभी भी समाज के अनेक वर्गों में पर्यावरण के प्रति पर्याप्त संवेदनशीलता का अभाव दिखाई देता है। इसलिए इस विषय का अध्ययन वर्तमान समय में अत्यंत प्रासंगिक एवं महत्वपूर्ण है।

पर्यावरण संरक्षण में शिक्षा संस्थानों की भूमिका (Role of educational institutions in environmental protection)

पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में शिक्षा संस्थानों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय समाज में पर्यावरणीय जागरूकता विकसित करने के प्रमुख माध्यम हैं। शिक्षा के द्वारा विद्यार्थियों में प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता, जिम्मेदारी एवं संरक्षण की भावना विकसित की जाती है। वर्तमान समय में बढ़ती पर्यावरणीय समस्याओं को देखते हुए शिक्षा संस्थानों की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ गई है।विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों को पर्यावरण संबंधी मूलभूत जानकारी प्रदान की जाती है। पाठ्यक्रम में पर्यावरण शिक्षा को शामिल करने का उद्देश्य विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण के महत्व से परिचित कराना है। इससे विद्यार्थियों में स्वच्छता, जल संरक्षण, वृक्षारोपण तथा प्राकृतिक

संसाधनों के उचित उपयोग की आदत विकसित होती है।महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर पर्यावरणीय विषयों पर शोध एवं अध्ययन को बढ़ावा दिया जाता है। विभिन्न संगोष्ठियों, कार्यशालाओं तथा जागरूकता अभियानों के माध्यम से विद्यार्थियों को पर्यावरणीय समस्याओं एवं उनके समाधान से अवगत कराया जाता है। राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS), राष्ट्रीय कैडेट कोर (NCC) तथा अन्य सामाजिक गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण के कार्यों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया जाता है।शिक्षा संस्थानों द्वारा वृक्षारोपण अभियान, स्वच्छता अभियान, प्लास्टिक मुक्त परिसर तथा जल संरक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इन गतिविधियों से विद्यार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती है। साथ ही, वे अपने परिवार एवं समाज को भी पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करते हैं।वर्तमान समय में डिजिटल शिक्षा एवं सोशल मीडिया के माध्यम से भी पर्यावरणीय जागरूकता को बढ़ावा दिया जा रहा है। ऑनलाइन कार्यक्रमों, वेबिनार तथा डिजिटल अभियानों के माध्यम से बड़ी संख्या में विद्यार्थियों तक पर्यावरण संबंधी जानकारी पहुँचाई जा रही है।

अतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षा संस्थान केवल ज्ञान प्रदान करने के केंद्र नहीं हैं, बल्कि वे पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिक जागरूकता के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यदि शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में पर्यावरणीय चेतना विकसित की जाए, तो भविष्य में एक स्वच्छ, सुरक्षित एवं संतुलित समाज का निर्माण संभव हो सकेगा।

अध्ययन के उद्देश्य (Objectives of the Study)

1. समकालीन भारतीय समाज में प्रमुख पर्यावरणीय समस्याओं का अध्ययन करना।
2. पर्यावरणीय जागरूकता के महत्व को स्पष्ट करना।
3. सामाजिक उत्तरदायित्व की भूमिका का विश्लेषण करना।
4. पर्यावरण संरक्षण में सरकार एवं सामाजिक संस्थाओं के योगदान का अध्ययन करना।
5. सतत विकास के संदर्भ में पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता को समझना।

शोध पद्धति (Research Methodology)

प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीयक तथ्यों पर आधारित है। अध्ययन के लिए विभिन्न पुस्तकों, शोध पत्रों, सरकारी रिपोर्टों, समाचार पत्रों तथा इंटरनेट स्रोतों का उपयोग किया गया है। यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है।

समकालीन भारतीय समाज में पर्यावरणीय समस्याएँ

भारत वर्तमान समय में अनेक पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना कर रहा है। ये समस्याएँ मानव स्वास्थ्य, सामाजिक जीवन तथा आर्थिक विकास को प्रभावित कर रही हैं।

वायु प्रदूषण

वायु प्रदूषण भारत की सबसे गंभीर समस्याओं में से एक है। महानगरों में वाहनों, उद्योगों तथा निर्माण कार्यों से निकलने वाला धुआँ वायु को प्रदूषित कर रहा है। दिल्ली जैसे शहरों में वायु गुणवत्ता सूचकांक अत्यधिक खराब स्तर तक पहुँच चुका है। इससे दमा, फेफड़ों के रोग तथा हृदय संबंधी बीमारियाँ बढ़ रही हैं।

जल प्रदूषण

जल मानव जीवन का आधार है, किंतु आज भारत की अधिकांश नदियाँ प्रदूषण का शिकार हो चुकी हैं। औद्योगिक कचरा, रासायनिक पदार्थ तथा घरेलू अपशिष्ट जल स्रोतों को दूषित कर रहे हैं। गंगा और यमुना जैसी पवित्र नदियाँ भी प्रदूषण से प्रभावित हैं।

वनों की कटाई

वन पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। किंतु विकास परियोजनाओं, शहरीकरण तथा औद्योगिकीकरण के कारण बड़े पैमाने पर वनों की कटाई हो रही है। इससे जैव विविधता प्रभावित हो रही है तथा जलवायु परिवर्तन की समस्या बढ़ रही है।

प्लास्टिक प्रदूषण

एकल उपयोग प्लास्टिक आधुनिक समाज की गंभीर समस्या बन चुका है। प्लास्टिक मिट्टी एवं जल स्रोतों को प्रदूषित करता है तथा पशु-पक्षियों के लिए भी हानिकारक है।

जलवायु परिवर्तन

वैश्विक तापमान में वृद्धि, अनियमित वर्षा, सूखा तथा बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाएँ जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को दर्शाती हैं। भारत में भी इसका प्रभाव कृषि, जल संसाधनों तथा मानव जीवन पर स्पष्ट दिखाई देता है।

पर्यावरणीय जागरूकता का महत्व

पर्यावरणीय जागरूकता का अर्थ है पर्यावरण संबंधी समस्याओं एवं उनके समाधान के प्रति समाज में चेतना विकसित करना। जागरूक समाज ही पर्यावरण संरक्षण के प्रति सकारात्मक कदम उठा सकता है।आज के समय में पर्यावरणीय जागरूकता इसलिए आवश्यक है क्योंकि पर्यावरणीय समस्याएँ केवल एक क्षेत्र तक सीमित नहीं हैं, बल्कि उनका प्रभाव संपूर्ण मानव समाज पर पड़ता है। यदि समाज जागरूक होगा तो लोग जल, वायु तथा अन्य प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करेंगे।

शिक्षा की भूमिका

पर्यावरणीय जागरूकता बढ़ाने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में पर्यावरण शिक्षा को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया गया है। इससे विद्यार्थियों में प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता विकसित होती है।

मीडिया की भूमिका

मीडिया पर्यावरणीय समस्याओं को समाज के सामने लाने का महत्वपूर्ण माध्यम है। समाचार पत्र, टेलीविजन, रेडियो तथा सोशल मीडिया के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण संबंधी संदेश व्यापक स्तर पर पहुँचाए जाते हैं।

सामाजिक संगठनों की भूमिका

गैर-सरकारी संगठन पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। ये संगठन वृक्षारोपण, जल संरक्षण तथा स्वच्छता अभियानों के माध्यम से समाज में जागरूकता फैला रहे हैं।

सामाजिक उत्तरदायित्व एवं पर्यावरण संरक्षण

सामाजिक उत्तरदायित्व का अर्थ समाज एवं पर्यावरण के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करना है। प्रत्येक व्यक्ति का यह दायित्व है कि वह पर्यावरण संरक्षण में अपना योगदान दे।

नागरिकों का उत्तरदायित्व

सामान्य नागरिक छोटे-छोटे प्रयासों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। जैसे—

- जल एवं बिजली की बचत करना
- प्लास्टिक का कम उपयोग करना
- वृक्षारोपण करना
- सार्वजनिक स्थानों को स्वच्छ रखना
- पर्यावरण संरक्षण अभियानों में भाग लेना
- उद्योगों का उत्तरदायित्व

उद्योगों को अपने उत्पादन कार्यों में पर्यावरण के अनुकूल तकनीकों का उपयोग करना चाहिए। प्रदूषण नियंत्रण उपकरणों का प्रयोग तथा अपशिष्ट प्रबंधन की उचित व्यवस्था आवश्यक है।

सरकार की भूमिका

भारत सरकार ने पर्यावरण संरक्षण हेतु अनेक योजनाएँ प्रारंभ की हैं। स्वच्छ भारत अभियान, नमामि गंगे योजना, राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम तथा प्लास्टिक प्रतिबंध जैसे कदम पर्यावरण संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास हैं।

पर्यावरण संरक्षण में जन सहभागिता

पर्यावरण संरक्षण केवल सरकारी प्रयासों से संभव नहीं है। इसके लिए जन सहभागिता आवश्यक है।

वृक्षारोपण अभियान

वृक्ष पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में सहायक होते हैं। वृक्षारोपण अभियान समाज में हरित चेतना विकसित करने का प्रभावी माध्यम है।

स्वच्छता अभियान

स्वच्छ भारत मिशन ने लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाई है। स्वच्छ वातावरण स्वस्थ समाज के निर्माण में सहायक होता है।

जल संरक्षण

जल संकट को रोकने के लिए वर्षा जल संचयन एवं जल बचत तकनीकों का उपयोग आवश्यक है।

सतत विकास और पर्यावरण

सतत विकास का अर्थ वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए भविष्य की पीढ़ियों के हितों की रक्षा करना है। पर्यावरण संरक्षण के बिना सतत विकास संभव नहीं है।

भारत में सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा तथा जैविक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। इससे पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ आर्थिक विकास भी संभव हो रहा है।

भविष्यकेलिएसुझाव (Suggestions for the future)

- भविष्य में पर्यावरणीय जागरूकता बढ़ाने हेतु डिजिटल शिक्षा का विस्तार।
- हरित प्रौद्योगिकी (Green Technology) को बढ़ावा देने की आवश्यकता।
- आने वाली पीढ़ियों के लिए सतत विकास की रणनीतियाँ।
- पर्यावरण संरक्षण में युवाओं एवं विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी।
- प्लास्टिक मुक्त भारत के निर्माण की भविष्यगत संभावनाएँ।
- जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने हेतु सामुदायिक सहभागिता का विकास

निष्कर्ष (CONCLUSION)

समकालीन भारतीय समाज में पर्यावरणीय समस्याएँ गंभीर चुनौती बन चुकी हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए पर्यावरणीय जागरूकता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व अत्यंत आवश्यक हैं। यदि समाज का प्रत्येक व्यक्ति पर्यावरण संरक्षण को अपना दायित्व समझे, तो पर्यावरणीय समस्याओं को काफी हद तक कम किया जा सकता है।शिक्षा, मीडिया, सामाजिक संगठन तथा सरकारी योजनाएँ पर्यावरणीय चेतना विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। साथ ही, उद्योगों एवं नागरिकों को भी पर्यावरण के प्रति संवेदनशील होना होगा।अतः यह कहा जा सकता है कि पर्यावरण संरक्षण केवल एक सरकारी नीति नहीं, बल्कि सामाजिक आंदोलन होना चाहिए। पर्यावरणीय जागरूकता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के माध्यम से ही स्वस्थ, स्वच्छ एवं संतुलित समाज का निर्माण संभव है।

संदर्भ सूची (REFERENCES)

1. अग्रवाल, ए. (2019). भारत में पर्यावरणीय समस्याएँ. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
2. भट्टाचार्य, एस. (2020). भारत में पर्यावरणीय जागरूकता एवं सतत विकास। जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज़, 12(3), 45–58।
3. चौहान, पी. (2021). पर्यावरण संरक्षण और भारतीय समाज. जयपुर: रावत पब्लिकेशन्स।
4. भारत सरकार। (2021). राष्ट्रीय पर्यावरण नीति रिपोर्ट. पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय।
5. गुप्ता, आर. (2018).सामाजिक उत्तरदायित्व एवं पर्यावरण संरक्षण. नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन्स।
6. कुमार, पी., एवं सिंह, आर. (2022). जलवायु परिवर्तन और भारतीय समाज।इंडियन जर्नल ऑफ एनवायरनमेंटल स्टडीज़, 8(2), 102–115।
7. मिश्रा, वी. (2020). भारत में पर्यावरण शिक्षा एवं जन-जागरूकता। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड रिसर्च, 14(1), 66–79।
8. शर्मा, वी. (2021). पर्यावरणीय जागरूकता में शिक्षा की भूमिका। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 15(1), 67–74।
9. सिंह, एम. (2019). भारत में प्रदूषण एवं पर्यावरणीय चुनौतियाँ. नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स।
10. संयुक्त राष्ट्र। (2020). सतत विकास लक्ष्य रिपोर्ट. न्यूयॉर्क: संयुक्त राष्ट्र प्रकाशन।
11. वर्मा, एस. (2021). सामाजिक सहभागिता एवं पर्यावरणीय स्थिरता। इंडियन जर्नल ऑफ सोशल रिसर्च, 9(4), 120–132।

12. यादव, एम. (2019). भारत में पर्यावरण प्रदूषण एवं जन-जागरूकता। रिसर्च जर्नल ऑफ सोशल एंड लाइफ साइंसेज़, 10(4), 88–96।